पानी बहता रहे-महोबा की चांपाकल मैकेनिक

महोबा के गांवों में ग्रामोन्नति संस्थान ने *वाटर एड* की परियोजना के तहत सात महिलाओं के एक समूह को मैकेनिक का काम सिखाया है– ये मैकेनिक अपने गांव के चांपाकल की देखभाल करती हैं और एक साथ मिलकर बड़े से बड़े सुधार को चुटकियों में निपटा देती हैं। कोहनी तक पानी मिट्टी और ग्रीस में डूबी इन महिलाओं को देखते ही आप इनकी काबलियत और प्रतिबद्धता का अनुमान लगा सकेंगे।

इन महिलाओं की भूमिका अहम है। पहले सरकारी पम्प खराब हो जाने पर इनकी मरम्मत करने में महीनों लग जाते थे। औरतों को पानी भरने के लिए गांव के कुंओं या दूसरे इलाके के चांपाकलों तक जाना पड़ता था। पर अब यह समस्या सुलझ गई है।

'पानी के कारण हम औरतों को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता था। चांपाकल बिगड़ जाने पर उसे सुधारने के लिए पुरुषों का मुंह देखना पड़ता था। ग्राम प्रधान के पास जाकर मिन्नतें करने पर भी कुछ नहीं होता था। इसलिए हमने तय किया कि इस काम को हम खुद सीखेंगे और चांपाकल की मरम्मत खुद करेंगे' मैकेनिक रामसखी ने बताया।

'चूंकि परिवार की देखभाल का प्रमुख दायित्व महिलाओं का होता है इसलिए इस परियोजना में शिरकत महत्वपूर्ण बन जाती है। इन भूमिकाओं में महिलाओं की भागीदारी से लोगों के नज़रिए में भी बदलाव आता है। औरतों के पास सम्पत्ति व आवास के अधिकार नहीं होते। वे पढ़ी-लिखी भी कम ही होती हैं। मैकेनिक का काम सीखने और समूह के साथ जुड़ने के कारण हम अपनी ज़िंदगी पर नियंत्रण हासिल करते हैं और लोगों के विचार भी हमारे बारे में अच्छे हो जाते हैं', शीला ने जोड़ा। एक अन्य महिला उमा ने बताया, 'हम मैकेनिक इसलिए बनीं क्योंकि हम यह रूढ़िवादी परम्परा तोड़ना चाहती थीं कि यह काम केवल पुरुष ही कर सकते हैं। अब हम यह दिखा सकते हैं कि औरतें भी मैकेनिक बन सकती हैं।'

'अब यहां लैंगिक समानता थोड़ी बेहतर हुई है और हममें आत्मविश्वास बढ़ा है। पहले हम गांव से बाहर जाने में बहुत घबराते थे। अब गांव में पानी की समस्या होने पर हम अपने स्वावलंबन समूह में इसकी बात करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर ज़िला मजिस्ट्रेट के पास शिकायत लेकर भी जाते हैं। हमने सरकार को अर्ज़ी देकर गांव में दो नए चांपाकल भी लगवा लिए हैं,' एक महिला मैकेनिक ने बताया।

औरतों ने हमें यह भी बताया कि इस बदलाव की लहर दूसरे गांवों तक कैसे पहुंच रही है। 'पहले पहल जब हम चांपाकल की मरम्मत करने दूसरे गांव जाते थे तो पुरुष हमें कहते थे कि तुम लोग इस काम को क्या जानो? पर अब पुरुष हमारे पास आकर चांपाकल की मरम्मत करने को कहते हैं। वे सामान लाकर देते हैं और हम उनकी मदद करते हैं।'

पर औरतों सिर्फ़ बिगड़े चांपाकल ही नहीं सुधारतीं, वे ग्रामवासियों को अच्छे स्वास्थ्य और स्वच्छता के फायदों को भी समझाती हैं जिससे समुदाय इन स्वास्थ्य सुविधाओं से लाभांवित हो सकें।

'अब बच्चे भी पढ़ने में रुचि ले रहे हैं। औरतें साईकिल चलाती हैं और इस प्रगति का प्रभाव हमारे परिवारों और बच्चों पर पड़ रहा है। जैसा कि रामसखी ने कहा, 'पहले हम अपना मुंह छुपाकर घूमते थे पर अब दुनिया के सामने खुलेआम घूमते हैं।'

साभारः वॉटर एड इंडिया